

विचार बिन्दु

दोष निकालना सुगम है, उसे अच्छा करना कठिन। –प्लूटार्क

लेखन, मानदेय और एक पुस्तक-विहीन समाज का खतरा

कुछ दिन पहले एक रोचक संवाद हुआ। यद्यपि यह बातचीत बहुत निजी और पारिवारिक वातावरण में हुई थी, मुझे लगा कि इसमें उठे प्रश्न व्यापक चर्चा के योग्य हैं। इसलिए इस संवाद की चर्चा यहां कर रहा हूं।

यह संवाद मेरी पौत्री और मेरे बीच हुआ। वह कई वर्षों से ऑस्ट्रेलिया में रह रही है। उसकी अधिकांश शिक्षा वहीं हुई और अब वह वहीं काम भी कर रही है। लेखन में उसकी गहरी रुचि है। उसकी कुछ कविताएँ वहाँ प्रकाशित हो चुकी हैं और वह वहां के विभिन्न प्रकाशनों के लिए नियमित रूप से लिखती भी है। पिछली मुलाकात में उसने सहज ढंग से बताया कि ऑस्ट्रेलिया में केवल लेखन के आधार पर भी सम्मानजनक जीवन जीना संभव है। यह हुई प्रथभूमि।

हाल ही में मैंने उसकी एक कविता पढ़ी। मुझे वह बहुत अच्छी लगी और मुझे लगा कि उसे भारत की किसी प्रमुख काव्य पत्रिका में प्रकाशित होना चाहिए। संयोग से उस पत्रिका के संपादक से मेरी आत्मीयता है, लेकिन मैं उस परिचय का दुरुपयोग नहीं करना चाहता था। इसलिए मैंने उन्हें कविता केवल उनकी राय जानने के लिए भेज दी। उन्हें भी वह कविता पसंद आई और उन्होंने स्वयं ही यह प्रस्ताव रखा कि वे इस युवा कवयित्री की कुछ कविताएँ प्रकाशित करना चाहेंगे। स्वाभाविक है, इससे मुझे गर्व का अनुभव हुआ। जब मैंने यह बात अपनी पौत्री को बताई तो वह भी प्रसन्न हुई। लेकिन तभी उसने एक प्रश्न पूछा जिसने मुझे थोड़ा चौंका दिया। उसने पूछा-क्या वह पत्रिका पेड (Paid) है?

चूँकि वह भारत के प्रकाशन जगत के तौर-तरीकों से परिचित नहीं है, मैंने उसे कुछ बातें समझाने की कोशिश की। मैंने बताया कि भारत में अधिकांश साहित्यिक पत्रिकाएँ अपने रचनाकारों को कोई मानदेय नहीं देती। साथ ही, सामान्यतः लेखक भी अपनी रचना प्रकाशित कराने के लिए प्रकाशक को पैसे नहीं देते। साहित्य छापने वाली अधिकांश पत्रिकाएँ लघु पत्रिकाएँ होती हैं जिनकी प्रसार संख्या सीमित होती है। कई बार तो वे निःशुल्क ही वितरित की जाती हैं। हाल के वर्षों में डाक-व्यय बढ़ जाने से उन्हें भेजना भी कठिन होता जा रहा है। मैंने यह भी बताया कि बड़ी प्रसार संख्या वाली पत्रिकाओं में साहित्य के लिए बहुत कम स्थान होता है।

मैंने उससे यह भी कहा कि भारत में साहित्य-लेखन प्रायःस्वातःसुखाय होता है। लेखक अपनी आजीविका के लिए नौकरी या किसी अन्य पेशे पर निर्भर रहते हैं। यह भी बताया कि कुछ पत्रिकाएँ-विशेषकर शोध से जुड़ी-लेखकों से पैसे लेकर लेख प्रकाशित करती हैं। कभी-कभी कुछ साहित्यिक पत्रिकाएँ भी परीक्षक रूप से लेखक से पैसा मांगती हैं, लेकिन यह बात अधिक समय तक छिपी नहीं रहती और ऐसी पत्रिकाओं तथा उनमें प्रकाशित होने वाले लेखकों को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता।

बात आगे बढ़ी तो पुस्तक-प्रकाशन की स्थिति पर भी चर्चा हुई। मैंने बताया कि भारत में-विशेषकर हिंदी में-साहित्यिक पुस्तकों का प्रकाशन तो बहुत होता है, लेकिन लेखक को उसके श्रम का पर्याप्त प्रतिलभ शायद ही मिलता है। प्रकाशकों का कहना होता है कि साहित्यिक पुस्तकें बहुत कम बिकती हैं, इसलिए वे रॉयट्टी नहीं दे पाते। कई बार लेखक स्वयं अपने पैसे से भी पुस्तकें प्रकाशित करते हैं। आजकल हिंदी प्रकाशन में यह तरीका काफ़ी सामान्य हो गया है। बात स्थापित और प्रसिद्ध लेखक अपने लेखन से कुछ आय प्राप्त कर लेते हैं, लेकिन अधिकांश लेखक अपनी जीविका के लिए अन्य साधनों पर निर्भर रहते हैं और लेखन को मुख्यतः अपने जुनून के रूप में निभाते हैं। और भी बहुत कुछ कहा जा सकता था, लेकिन मुझे लगा कि इस संवाद के लिए इतना पर्याप्त है।

मेरी पौत्री ने मेरी बातें ध्यान से सुनीं और फिर शांत स्वर में कहा कि सिद्धांततः वह भी मानती है कि लेखन भीतर की प्रेरणा से होना चाहिए, न कि केवल लाभ की अपेक्षा से। लेकिन जीवन केवल सिद्धांतों से नहीं चलता। यदि कोई व्यक्ति पूरे मन से लिखे और बदले में उसे

बहुत-सी ऑनलाइन सामग्री निःशुल्क पढ़ी जा सकती है, लेकिन प्रिंट पत्रिकाएँ सामान्यतः खरीदकर ही पढ़ी जाती हैं। कुछ डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म प्रतिदिन सीमित संख्या में लेख निःशुल्क पढ़ने देते हैं, उसके बाद उन्हें भुगतान करना पड़ता है। कथेतर लेखन और कथा साहित्य के लिए भी अलग-अलग व्यवस्थाएँ होती हैं। लेकिन कुल मिलाकर स्थिति यह है कि वहाँ बिना भुगतान के लिखना लगभग असामान्य माना जाता है।

कुछ भी न मिले, तो वह अपना जीवन कैसे चलाएगा? वह खाएगा क्या, रहेगा कहाँ, पहनेगा क्या? आखिर हर व्यक्ति की भोजन, आवास और वस्त्र की आवश्यकता तो होती ही है।

भारतीय व्यवस्था में इसका उत्तर स्पष्ट है-जीविका के लिए नौकरी या व्यवसाय करो और मन की संतुष्टि के लिए लिखो। लेकिन तब वह व्यक्ति चाहे जो हो जाए, पूर्णकालिक लेखक नहीं बन सकता। वह अधिक से अधिक अंशकालिक लेखक ही रहेगा।

यहाँ एक महत्वपूर्ण प्रश्न उठता है। यदि लेखक अपना पूरा समय और ऊर्जा लेखन को नहीं दे सकता, तो उसके काम की गुणवत्ता से हम क्या और कितनी अपेक्षा कर सकते हैं? हम विदेशी लेखकों की गहन शोध पर आधारित पुस्तकों को मानदेय नहीं देते हैं और अफसोस करते हैं कि हमारे यहाँ वैसा लेखन क्यों नहीं होता। लेकिन क्या हम यह भी सोचते हैं कि हमारे लेखकों को वैसी ही परिस्थितियाँ उपलब्ध हैं या नहीं? क्या वे अपने लेखन की प्रामाणिकता के लिए दूर-दूर तक यात्राएँ कर सकते हैं? क्या वे किसी पुस्तक के लिए दो-तीन वर्ष तैयारी में लगा सकते हैं? क्या वे अपने शोध के लिए हजारों रुपये की किताबें खरीद सकते हैं? क्या वे शोध-सहायकों की टीम रख सकते हैं? क्या वे अपने लेखन को संपादित कराने के लिए पेशेवर संपादकों को भुगतान कर सकते हैं? क्या वे प्रकाशक से बातचीत के लिए साहित्यिक एजेंट नियुक्त कर सकते हैं? यदि इन सभी प्रश्नों का उत्तर स्पष्ट रूप से 'नहीं' है, तो उनसे महान कृतियों की अपेक्षा करना उचित है? प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद वे लिखते रहते हैं, क्या यह अपने आप में कम बड़ी बात है?

जब मैंने यह सब कहा तो उसने ऑस्ट्रेलिया की स्थिति के बारे में कुछ और जानकारी दी। वहाँ जो प्रकाशन अपने लेखकों को मानदेय नहीं देते या बहुत कम देते हैं, उन्हें अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता। उन्हें खुले तौर पर लेखक की प्रतिभा का शोषण करने वाला माना जाता है। हाँ, वहाँ भी छोटे और बड़े प्रकाशनों में भुगतान की दरें अलग-अलग होती हैं। बहुत-सी ऑनलाइन सामग्री निःशुल्क पढ़ी जा सकती है, लेकिन प्रिंट पत्रिकाएँ सामान्यतः खरीदकर ही पढ़ी जाती हैं। कुछ डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म प्रतिदिन सीमित संख्या में लेख निःशुल्क पढ़ने देते हैं, उसके बाद उन्हें भुगतान करना पड़ता है। कथेतर लेखन और कथा साहित्य के लिए भी अलग-अलग व्यवस्थाएँ होती हैं। लेकिन कुल मिलाकर स्थिति यह है कि वहाँ बिना भुगतान के लिखना लगभग असामान्य माना जाता है।

जिस प्रकार मेरी पौत्री के लिए यह कल्पना से परे है कि कोई व्यक्ति जीवन भर बिना पैसे लिए लिखता रहे, उसी प्रकार हमारे लिए यह कल्पना करना कठिन है कि किसी लेखक को उसके लिखे हर शब्द के लिए भुगतान किया जाए। ये दो अलग-अलग व्यवस्थाएँ हैं।

प्रश्न यह है कि हमें कौन-सी व्यवस्था अधिक उचित लगती है? क्या लिखना भी एक काम नहीं है? यदि है, तो उसके लिए भुगतान क्यों न हो? लेकिन यदि हम यह प्रश्न उठाते हैं तो एक और प्रश्न भी सामने आता है-क्या हम पाठक के रूप में पढ़ने के लिए पैसे खर्च करते हैं? क्या हम नियमित रूप से पुस्तकें और पत्रिकाएँ खरीदते हैं? क्या हमारे घरेलू बजट में इसके लिए कोई स्थान होता है? क्या हमारे घरों में पुस्तकों के लिए कोई कोना निर्धारित होता है? क्या हमारे यहाँ एक मजबूत सार्वजनिक पुस्तकालय व्यवस्था है? क्या नई बसने वाली कॉलोनिमें में मंदिर, स्विमिंग पूल, टेनिस कोर्ट और जिम आदि के साथ-साथपुस्तकालय भी बनाए जाते हैं? क्या हमारे शैक्षणिक संस्थान नियमित रूप से नई पुस्तकें खरीदते हैं? क्या हम अपने बच्चों और विद्यार्थियों को अधिक पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं? क्या हमारे अखबार और पत्रिकाएँ नई पुस्तकों की नियमित चर्चा करते हैं?

इन प्रश्नों के उत्तर हम सब जानते हैं। तो फिर लेखक को पैसा कहाँ से मिलेगा? और यदि लेखक को पैसा नहीं मिलेगा, तो वह कब तक केवल अपने जुनून के सहारे लिखता रहेगा?

क्या हम तेजी से एक पुस्तक-विहीन समाज की ओर बढ़ रहे हैं? और पुस्तक-विहीन समाज अंततः विचार-विहीन समाज बन जाता है-एक ऐसा समाज जिसमें दृष्टि नहीं होती, एक ऐसा समाज जिसमें सपने नहीं होते। सोचिए। गंभीरता से सोचिए। और कुछ कीजिए-इससे पहले कि बहुत देर हो जाए।

—अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

संपादकीय

राजस्थान की उच्च शिक्षा में सेवा निरंतरता और वेतन संरक्षण : एक अनिवार्य नीतिगत सुधार

राजस्थान में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक गंभीर विसंगति देखने को मिल रही है



प्रो. अशोक कुमार

किसी भी राष्ट्र या राज्य की प्रगति उसकी उच्च शिक्षा की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। राजस्थान, जो अपनी सांस्कृतिक धरोहर के साथ-साथ अब एक एजुकेशन हब के रूप में उभर रहा है, वहाँ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक गंभीर विसंगति देखने को मिल रही है। यह विसंगति है-राजकीय महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों के बीच शिक्षकों की गतिशीलता में आने वाली बाधाएं। वर्तमान में, राजस्थान लोक सेवा आयोग के माध्यम से नियुक्त उच्च योग्यता प्राप्त नेट, पीएचडी शिक्षक जब विश्वविद्यालयों में नियुक्त होते हैं, तो उन्हें अपने पिछले वर्षों के अनुभव और वेतन का लाभ नहीं मिलता। यह न केवल उन शिक्षकों के साथ अन्याय है, बल्कि राज्य की अकादमिक उत्कृष्टता के लिए भी एक बड़ा खतरा है।

राजस्थान के विश्वविद्यालयों में शिक्षकों की नियुक्तियाँ कई वर्षों तक लंबित रहती हैं। इस बीच, अत्यधिक सक्षम विद्वान, जो पीएचडी धारक हैं

और नेट उत्तीर्ण हैं, अपना करियर शुरू करने के लिए राजस्थान लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में बैठते हैं और राजकीय महाविद्यालयों में सहायक आचार्यके रूप में कार्यभार ग्रहण कर लेते हैं।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब 5-10 वर्षों के अंतराल के बाद विश्वविद्यालयों में भर्ती प्रक्रिया शुरू होती है। ये अनुभवी शिक्षक, जो अब कॉलेज शिक्षा प्रणाली के अभिन्न अंग बन चुके हैं, अपनी शोध अभिरूचि के कारण विश्वविद्यालयों में आवेदन करते हैं। चयन होने पर, उन्हें एक नवगंतुक की तरह व्यवहार किया जाता है। उनकी पिछली सरकारी सेवा, उनके द्वारा पढ़ाए गए वर्ष और उनका प्राप्त किया गया वेतन स्तर-सब कुछ शून्य मान लिया जाता है।

प्रमुख चुनौतियाँ और उनके प्रभाव

- वेतन संरक्षण का अभाव
- एक शिक्षक जिसने राजकीय कॉलेज में 8 साल सेवा दी है, वह सीनियर स्कूल या सिलेक्शन ग्रेड पर होता है। विश्वविद्यालय ज्वाइन करते ही उसे पुनः शुरुआती मूल वेतन पर ला दिया जाता है। यह आर्थिक दंड जैसा है। परिवार और सामाजिक जिम्मेदारियों के बीच कोई भी विद्वान स्वेच्छा से अपनी सैलरी कम करवाकर शोध क्षेत्र में नहीं जाना चाहेगा।

राजकीय एडवांसमेंट स्कीम में बाधा

- राजकीय एडवांसमेंट स्कीम में शिक्षकों की नियुक्तियाँ कई वर्षों तक लंबित रहती हैं। इस बीच, अत्यधिक सक्षम विद्वान, जो पीएचडी धारक हैं

और नेट उत्तीर्ण हैं, अपना करियर शुरू करने के लिए राजस्थान लोक सेवा आयोग की परीक्षाओं में बैठते हैं और राजकीय महाविद्यालयों में सहायक आचार्यके रूप में कार्यभार ग्रहण कर लेते हैं।

समस्या तब उत्पन्न होती है जब 5-10 वर्षों के अंतराल के बाद विश्वविद्यालयों में भर्ती प्रक्रिया शुरू होती है। ये अनुभवी शिक्षक, जो अब कॉलेज शिक्षा प्रणाली के अभिन्न अंग बन चुके हैं, अपनी शोध अभिरूचि के कारण विश्वविद्यालयों में आवेदन करते हैं। चयन होने पर, उन्हें एक नवगंतुक की तरह व्यवहार किया जाता है। उनकी पिछली सरकारी सेवा, उनके द्वारा पढ़ाए गए वर्ष और उनका प्राप्त किया गया वेतन स्तर-सब कुछ शून्य मान लिया जाता है।

प्रमुख चुनौतियाँ और उनके प्रभाव

- वेतन संरक्षण का अभाव
- एक शिक्षक जिसने राजकीय कॉलेज में 8 साल सेवा दी है, वह सीनियर स्कूल या सिलेक्शन ग्रेड पर होता है। विश्वविद्यालय ज्वाइन करते ही उसे पुनः शुरुआती मूल वेतन पर ला दिया जाता है। यह आर्थिक दंड जैसा है। परिवार और सामाजिक जिम्मेदारियों के बीच कोई भी विद्वान स्वेच्छा से अपनी सैलरी कम करवाकर शोध क्षेत्र में नहीं जाना चाहेगा।

राजकीय एडवांसमेंट स्कीम में बाधा

- राजकीय एडवांसमेंट स्कीम में शिक्षकों की नियुक्तियाँ कई वर्षों तक लंबित रहती हैं। इस बीच, अत्यधिक सक्षम विद्वान, जो पीएचडी धारक हैं

इसी पावन धरती पर स्थित लोकदेवता बाबा रामदेव जी के गुरु बालीनाथ जी की तपोस्थली बालीनाथ जी का धूणा सदियों से श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। देश-विदेश से आने वाले बाबा रामदेव जी के लाखों भक्त हर वर्ष इस पवित्र स्थल पर पहुंचकर गुरु बालीनाथ जी के धूणे पर शीश नवाते हैं और आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। आस्था, इतिहास और लोककथाओं से जुड़ा यह स्थान पश्चिमी राजस्थान की धार्मिक परंपरा का महत्वपूर्ण अध्याय माना जाता है।

पश्चिमी राजस्थान की परमाणु नगरी पोकरण केवल अपने ऐतिहासिक और सामरिक महत्व के लिए ही नहीं, बल्कि शक्ति, भक्ति और आध्यात्मिक आस्था के केंद्र के रूप में भी जानी जाती है। यह तपोभूमि अनेक संतों की साधना और तपस्या की साक्षी रही है। मान्यता है कि यहां भगवान परशुराम, बालक नाथ जी, कबीर दास, साधुजी, दुर्गरपुरी जी, रामनाथ जी और सेवपुरी महाराज सहित कई संतों ने साधना कर मानव कल्याण का संदेश दिया।

गुरु-शिष्य परंपरा का पावन स्थल : लोक मान्यताओं के अनुसार संत बालीनाथ जी नाथ संप्रदाय के सिद्ध योगी और महान तपस्वी थे। उन्होंने पश्चिमी राजस्थान के कई स्थानों पर साधना की, जिनमें पोकरण क्षेत्र की यह तपोस्थली विशेष रूप से प्रसिद्ध हुई। कहा जाता है कि संत बालीनाथ जी ने यहां अपना धूणा स्थापित कर वर्षों तक कठोर तपस्या की। समय के साथ यह स्थान

बालीनाथ जी का धूणा के नाम से विख्यात हो गया। जनश्रुति के अनुसार लोकदेवता बाबा रामदेव जी ने बाल्यकाल में यहीं अपने गुरु बालीनाथ जी से योग, साधना और धर्म का ज्ञान प्राप्त किया था। इस कारण यह स्थल गुरु-शिष्य परंपरा का अद्वितीय प्रतीक माना जाता है।

लोककथाओं में जीवंत है इतिहास

स्थानीय लोककथाओं में उल्लेख मिलता है कि प्राचीन समय में इस क्षेत्र में भैरव नामक दैत्य का आतंक था। कहा जाता है कि बालीनाथ जी ने बालक रामदेव जी को उसकी बुरी नजर से बचाने के लिए कुछ समय तक अपने आश्रम में ही सुरक्षित रखा था। इसी कारण यह स्थान आगे चलकर गुरु का धूणा या बालीनाथ जी का धूणा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। एक अन्य मान्यता के अनुसार इस धूणे की पवित्र राख को चमत्कारी माना जाता है। श्रद्धालु इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं और विश्वास करते हैं कि यहां श्रद्धा से माथा टेकने से कष्ट

बालीनाथ जी का धूणा के नाम से विख्यात हो गया। जनश्रुति के अनुसार लोकदेवता बाबा रामदेव जी ने बाल्यकाल में यहीं अपने गुरु बालीनाथ जी से योग, साधना और धर्म का ज्ञान प्राप्त किया था। इस कारण यह स्थल गुरु-शिष्य परंपरा का अद्वितीय प्रतीक माना जाता है।

लोककथाओं में जीवंत है इतिहास

स्थानीय लोककथाओं में उल्लेख मिलता है कि प्राचीन समय में इस क्षेत्र में भैरव नामक दैत्य का आतंक था। कहा जाता है कि बालीनाथ जी ने बालक रामदेव जी को उसकी बुरी नजर से बचाने के लिए कुछ समय तक अपने आश्रम में ही सुरक्षित रखा था। इसी कारण यह स्थान आगे चलकर गुरु का धूणा या बालीनाथ जी का धूणा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। एक अन्य मान्यता के अनुसार इस धूणे की पवित्र राख को चमत्कारी माना जाता है। श्रद्धालु इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं और विश्वास करते हैं कि यहां श्रद्धा से माथा टेकने से कष्ट

लोककथाओं में जीवंत है इतिहास

स्थानीय लोककथाओं में उल्लेख मिलता है कि प्राचीन समय में इस क्षेत्र में भैरव नामक दैत्य का आतंक था। कहा जाता है कि बालीनाथ जी ने बालक रामदेव जी को उसकी बुरी नजर से बचाने के लिए कुछ समय तक अपने आश्रम में ही सुरक्षित रखा था। इसी कारण यह स्थान आगे चलकर गुरु का धूणा या बालीनाथ जी का धूणा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। एक अन्य मान्यता के अनुसार इस धूणे की पवित्र राख को चमत्कारी माना जाता है। श्रद्धालु इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं और विश्वास करते हैं कि यहां श्रद्धा से माथा टेकने से कष्ट

लोककथाओं में जीवंत है इतिहास

स्थानीय लोककथाओं में उल्लेख मिलता है कि प्राचीन समय में इस क्षेत्र में भैरव नामक दैत्य का आतंक था। कहा जाता है कि बालीनाथ जी ने बालक रामदेव जी को उसकी बुरी नजर से बचाने के लिए कुछ समय तक अपने आश्रम में ही सुरक्षित रखा था। इसी कारण यह स्थान आगे चलकर गुरु का धूणा या बालीनाथ जी का धूणा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। एक अन्य मान्यता के अनुसार इस धूणे की पवित्र राख को चमत्कारी माना जाता है। श्रद्धालु इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं और विश्वास करते हैं कि यहां श्रद्धा से माथा टेकने से कष्ट

लोककथाओं में जीवंत है इतिहास

स्थानीय लोककथाओं में उल्लेख मिलता है कि प्राचीन समय में इस क्षेत्र में भैरव नामक दैत्य का आतंक था। कहा जाता है कि बालीनाथ जी ने बालक रामदेव जी को उसकी बुरी नजर से बचाने के लिए कुछ समय तक अपने आश्रम में ही सुरक्षित रखा था। इसी कारण यह स्थान आगे चलकर गुरु का धूणा या बालीनाथ जी का धूणा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। एक अन्य मान्यता के अनुसार इस धूणे की पवित्र राख को चमत्कारी माना जाता है। श्रद्धालु इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं और विश्वास करते हैं कि यहां श्रद्धा से माथा टेकने से कष्ट

लोककथाओं में जीवंत है इतिहास

स्थानीय लोककथाओं में उल्लेख मिलता है कि प्राचीन समय में इस क्षेत्र में भैरव नामक दैत्य का आतंक था। कहा जाता है कि बालीनाथ जी ने बालक रामदेव जी को उसकी बुरी नजर से बचाने के लिए कुछ समय तक अपने आश्रम में ही सुरक्षित रखा था। इसी कारण यह स्थान आगे चलकर गुरु का धूणा या बालीनाथ जी का धूणा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। एक अन्य मान्यता के अनुसार इस धूणे की पवित्र राख को चमत्कारी माना जाता है। श्रद्धालु इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं और विश्वास करते हैं कि यहां श्रद्धा से माथा टेकने से कष्ट

लोककथाओं में जीवंत है इतिहास

स्थानीय लोककथाओं में उल्लेख मिलता है कि प्राचीन समय में इस क्षेत्र में भैरव नामक दैत्य का आतंक था। कहा जाता है कि बालीनाथ जी ने बालक रामदेव जी को उसकी बुरी नजर से बचाने के लिए कुछ समय तक अपने आश्रम में ही सुरक्षित रखा था। इसी कारण यह स्थान आगे चलकर गुरु का धूणा या बालीनाथ जी का धूणा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। एक अन्य मान्यता के अनुसार इस धूणे की पवित्र राख को चमत्कारी माना जाता है। श्रद्धालु इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं और विश्वास करते हैं कि यहां श्रद्धा से माथा टेकने से कष्ट

लोककथाओं में जीवंत है इतिहास

स्थानीय लोककथाओं में उल्लेख मिलता है कि प्राचीन समय में इस क्षेत्र में भैरव नामक दैत्य का आतंक था। कहा जाता है कि बालीनाथ जी ने बालक रामदेव जी को उसकी बुरी नजर से बचाने के लिए कुछ समय तक अपने आश्रम में ही सुरक्षित रखा था। इसी कारण यह स्थान आगे चलकर गुरु का धूणा या बालीनाथ जी का धूणा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। एक अन्य मान्यता के अनुसार इस धूणे की पवित्र राख को चमत्कारी माना जाता है। श्रद्धालु इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं और विश्वास करते हैं कि यहां श्रद्धा से माथा टेकने से कष्ट

लोककथाओं में जीवंत है इतिहास

स्थानीय लोककथाओं में उल्लेख मिलता है कि प्राचीन समय में इस क्षेत्र में भैरव नामक दैत्य का आतंक था। कहा जाता है कि बालीनाथ जी ने बालक रामदेव जी को उसकी बुरी नजर से बचाने के लिए कुछ समय तक अपने आश्रम में ही सुरक्षित रखा था। इसी कारण यह स्थान आगे चलकर गुरु का धूणा या बालीनाथ जी का धूणा के नाम से प्रसिद्ध हो गया। एक अन्य मान्यता के अनुसार इस धूणे की पवित्र राख को चमत्कारी माना जाता है। श्रद्धालु इसे प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं और विश्वास करते हैं कि यहां श्रद्धा से माथा टेकने से कष्ट

वेतन संरक्षण के ठोस नियम सरकारी कर्मचारी के एक विभाग से दूसरे विभाग में जाने पर अंतिम वेतन प्रमाण पत्र-को सुरक्षित रखना एक स्थापित प्रशासनिक सिद्धांत है। इसे शिक्षा विभाग में भी अनिवार्य रूप से लागू किया जाना चाहिए।

नोशनल फिक्सेशन: नियुक्ति के समय शिक्षक के पिछले इंजीनैटर्स को संरक्षित कर नया वेतन निर्धारित किया जाए। इससे शिक्षक को मानसिक शांति मिलेगी और वह पूर्ण ऊर्जा के साथ शोध कार्य कर सकेगा।

एकीकृत उच्च शिक्षा सेवा का गठन

राजस्थान को कॉलेज शिक्षा और विश्वविद्यालय शिक्षा के बीच की दीवार को गिराना होगा। एक यूनिफाइड कैडर या एकीकृत संवर्ग बनाने से शिक्षकों का स्थानांतरण या प्रतियुक्ति आसान होगा।

इससे सीनियरिटी विवाद खत्म होंगे और एक साझा अंतिम वेतन प्रमाण पत्र, सेवा नियम पुस्तिका या सेवा नियमावली होने से वित्तीय लाभों में एकरूपता आएगी। विश्वविद्यालयों को अपनी भर्ती प्रक्रिया को राजस्थान लोक सेवा आयोग की तर्ज पर नियमित करना चाहिए।

अनुभव को प्राथमिकता: स्क्रीनिंग या इंटरव्यू प्रक्रिया में राजकीय कॉलेजों में पढ़ा रहे शिक्षकों को उनके शिक्षक दिवस के आधार पर अतिरिक्त अंक मिलने चाहिए। यह उनके द्वारा समाज को दी गई सेवाओं का वास्तविक सम्मान होगा।

यदि इन सुझावों को लागू किया जाता है, तो इसके लाभ केवल शिक्षकों

तक सीमित नहीं रहेंगे। शोध की गुणवत्ता में सुधार: अनुभवी शिक्षक जब विश्वविद्यालयों में आएंगे, तो वे अपने साथ व्यावहारिक ज्ञान और शोध की परिपक्वता लाएंगे।

नैकर्मैकिंग में सुधार: जब विश्वविद्यालयों में फेकल्टी की प्रोफाइल मजबूत होगी और भारत में छात्र-शिक्षक अनुपात सुधरेगा, तो प्रदेश के विश्वविद्यालयों की राष्ट्रीय रैंकिंग में भारी उछाल आएगा।

युवाओं को प्रेरणा: योग्य शिक्षकों को उचित सम्मान मिलने से नई पीढ़ी भी शोध और शिक्षा के क्षेत्र में आने के लिए प्रेरित होगी।

शिक्षक केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि समाज का मार्गदर्शक होता है। राजस्थान के संदर्भ में, राजकीय महाविद्यालयों के अनुभवी विद्वानों को विश्वविद्यालयों में एसेट मानकर उन्हें पूर्ण सेवा लाभ और वेतन संरक्षण देना समय की मांग है। यदि प्रशासनिक जड़ता के कारण इन विद्वानों का मार्ग रोका गया, तो हमारे विश्वविद्यालय केवल ईंट-पत्थर की इमारतें बकर रह जाएंगे, जहाँ शोध और मौलिक चिंतन का अभाव होगा।

अतः, राज्य सरकार को अविलंब एक उच्च-स्तरीय समिति का गठन कर इन विसंगतियों को दूर करना चाहिए ताकि पथारी म्हारे देस की तर्ज पर हमारे विश्वविद्यालय भी प्रतिभाओं का सहर्ष स्वागत कर सकें।

—प्रोफेसर अशोक कुमार, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

तक सीमित नहीं रहेंगे। शोध की गुणवत्ता में सुधार: अनुभवी शिक्षक जब विश्वविद्यालयों में आएंगे, तो वे अपने साथ व्यावहारिक ज्ञान और शोध की परिपक्वता लाएंगे।

नैकर्मैकिंग में सुधार: जब विश्वविद्यालयों में फेकल्टी की प्रोफाइल मजबूत होगी और भारत में छात्र-शिक्षक अनुपात सुधरेगा, तो प्रदेश के विश्वविद्यालयों की राष्ट्रीय रैंकिंग में भारी उछाल आएगा।

युवाओं को प्रेरणा: योग्य शिक्षकों को उचित सम्मान मिलने से नई पीढ़ी भी शोध और शिक्षा के क्षेत्र में आने के लिए प्रेरित होगी।

शिक्षक केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि समाज का मार्गदर्शक होता है। राजस्थान के संदर्भ में, राजकीय महाविद्यालयों के अनुभवी विद्वानों को विश्वविद्यालयों में एसेट मानकर उन्हें पूर्ण सेवा लाभ और वेतन संरक्षण देना समय की मांग है। यदि प्रशासनिक जड़ता के कारण इन विद्वानों का मार्ग रोका गया, तो हमारे विश्वविद्यालय केवल ईंट-पत्थर की इमारतें बकर रह जाएंगे, जहाँ शोध और मौलिक चिंतन का अभाव होगा।

अतः, राज्य सरकार को अविलंब एक उच्च-स्तरीय समिति का गठन कर इन विसंगतियों को दूर करना चाहिए ताकि पथारी म्हारे देस की तर्ज पर हमारे विश्वविद्यालय भी प्रतिभाओं का सहर्ष स्वागत कर सकें।

—प्रोफेसर अशोक कुमार, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

तक सीमित नहीं रहेंगे। शोध की गुणवत्ता में सुधार: अनुभवी शिक्षक जब विश्वविद्यालयों में आएंगे, तो वे अपने साथ व्यावहारिक ज्ञान और शोध की परिपक्वता लाएंगे।

नैकर्मैकिंग में सुधार: जब विश्वविद्यालयों में फेकल्टी की प्रोफाइल मजबूत होगी और भारत में छात्र-शिक्षक अनुपात सुधरेगा, तो प्रदेश के विश्वविद्यालयों की राष्ट्रीय रैंकिंग में भारी उछाल आएगा।

युवाओं को प्रेरणा: योग्य शिक्षकों को उचित सम्मान मिलने से नई पीढ़ी भी शोध और शिक्षा के क्षेत्र में आने के लिए प्रेरित होगी।

शिक्षक केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि समाज का मार्गदर्शक होता है। राजस्थान के संदर्भ में, राजकीय महाविद्यालयों के अनुभवी विद्वानों को विश्वविद्यालयों में एसेट मानकर उन्हें पूर्ण सेवा लाभ और वेतन संरक्षण देना समय की मांग है। यदि प्रशासनिक जड़ता के कारण इन विद्वानों का मार्ग रोका गया, तो हमारे विश्वविद्यालय केवल ईंट-पत्थर की इमारतें बकर रह जाएंगे, जहाँ शोध और मौलिक चिंतन का अभाव होगा।

अतः, राज्य सरकार को अविलंब एक उच्च-स्तरीय समिति का गठन कर इन विसंगतियों को दूर करना चाहिए ताकि पथारी म्हारे देस की तर्ज पर हमारे विश्वविद्यालय भी प्रतिभाओं का सहर्ष स्वागत कर सकें।

—प्रोफेसर अशोक कुमार, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

तक सीमित नहीं रहेंगे। शोध की गुणवत्ता में सुधार: अनुभवी शिक्षक जब विश्वविद्यालयों में आएंगे, तो वे अपने साथ व्यावहारिक ज्ञान और शोध की परिपक्वता लाएंगे।

नैकर्मैकिंग में सुधार: जब विश्वविद्यालयों में फेकल्टी की प्रोफाइल मजबूत होगी और भारत में छात्र-शिक्षक अनुपात सुधरेगा, तो प्रदेश के विश्वविद्यालयों की राष्ट्रीय रैंकिंग में भारी उछाल आएगा।

युवाओं को प्रेरणा: योग्य शिक्षकों को उचित सम्मान मिलने से नई पीढ़ी भी शोध और शिक्षा के क्षेत्र में आने के लिए प्रेरित होगी।

शिक्षक केवल एक कर्मचारी नहीं, बल्कि समाज का मार्गदर्शक होता है। राजस्थान के संदर्भ में, राजकीय महाविद्यालयों के अनुभवी विद्वानों को विश्वविद्यालयों में एसेट मानकर उन्हें पूर्ण सेवा लाभ और वेतन संरक्षण देना समय की मांग है। यदि प्रशासनिक जड़ता के कारण इन विद्वानों का मार्ग रोका गया, तो हमारे विश्वविद्यालय केवल ईंट-पत्थर की इमारतें बकर रह जाएंगे, जहाँ शोध और मौलिक चिंतन का अभाव होगा।

अतः, राज्य सरकार को अविलंब एक उच्च-स्तरीय समिति का गठन कर इन विसंगतियों को दूर करना चाहिए ताकि पथारी म्हारे देस की तर्ज पर हमारे विश्वविद्यालय भी प्रतिभाओं का सहर्ष स्वागत कर सकें।

—प्रोफेसर अशोक कुमार, विभागाध्यक्ष राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर

परमाणु नगरी पोकरण में आस्था का अद्भुत केंद्र

गुरु बालीनाथजी का ऐतिहासिक धूणा : हजारों वर्ष पुरानी तपोस्थली पर

हर वर्ष उमड़ती है लाखों श्रद्धालुओं की भीड़



जुगल किशोर बिस्मा

इसी पावन धरती पर स्थित लोकदेवता बाबा रामदेव जी के गुरु बालीनाथ जी की तपोस्थली बालीनाथ जी का धूणा सदियों से श्रद्धालुओं की आस्था का प्रमुख केंद्र बना हुआ है। देश-विदेश से आने वाले बाबा रामदेव जी के लाखों भक्त हर